राष्ट्रीय संगोष्ठी

'पश्चिमी भारत की पुरातात्त्विक एवं अभिलेखीय सम्पदा : युगयुगीन'

Archaeological and Epigraphical Heritage of Western India : Through the Ages

दिनांक: 15–09–2023 (शुक्रवार)

आयोजक

'IQAC' गूजरात विद्यापीठ,
इतिहास एवं संस्कृति विभाग, गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद
एवं
आर्कियोलोजी एवं एपिग्राफी सोसाईटी, बीकानेर

आयोजन स्थल

इतिहास एवं संस्कृति विभाग,
गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद

संपर्क

डॉ. विक्रमसिंह अमरावत	:	9512176710
डॉ. राजेन्द्र कुमार	:	9414429605
डॉ. मोतीभाई देवुं	:	9662294016

संगोष्ठी संयोजक

डॉ. विक्रमसिंह अमरावत
डॉ. राजेन्द्र कुमार

मार्गदर्शन	मार्गदर्शन	संरक्षक
डॉ. कनैयालाल नायक	प्रो. बी.एल. भादानी	प्रो. (डॉ.) भरत जोशी
(डीन एवं अध्यक्ष)	(अध्यक्ष)	(कुलनायक)
इतिहास एवं संस्कृति विभाग	आर्कियोलॉजी एंड एपिग्राफी सोसाइटी	गूजरात विद्यापीठ अहमदाबाद
सामाजिक विज्ञान संकाय	बीकानेर (राजस्थान)	
गूजरात विद्यापीठ अहमदाबाद		

संगोष्ठी संकल्पना

भारत के इतिहास में पश्चिमी क्षेत्र का विशिष्ट योगदान रहा है। पश्चिमी भारत में वर्तमान भारत के राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात एवं महाराष्ट्र के राज्यों का समावेश किया जा सकता है। प्रागैतिहासिक काल एवं आद्य–ऐतिहासिक कालीन संस्कृतियों के अनेक स्थल इस क्षेत्र में फैले हुए हैं जो कि इतिहासकारों को सदैव आकर्षित करते रहे हैं। हड़प्पीय सभ्यता के सबसे अधिक स्थल भारत के पश्चिमी राज्य गुजरात में प्राप्त हुए हैं। ऐतिहासिक काल में प्राचीन, मध्य एवं आधुनिक युग के इतिहास को जानने के लिये पुरातात्त्विक एवं अभिलेखीय सामग्री की इस क्षेत्र में प्रचुरता सर्वविदित है। गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद एवं आर्कियोलॉजी एण्ड एपिग्राफी सोसाइटी के संयुक्त तत्वावधान में **"पश्चिमी भारत की पुरातात्त्विक और अभिलेखीय सम्पदा–युगयुगीन"** विषय पर 15 सितंबर 2023 को एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया जा रहा है।

संगोष्ठी के माध्यम से विषय के विद्वानों, पुरातत्त्वविदों तथा इतिहासकारों को पश्चिमी भारत की समृद्ध ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत को जानने–समझने एवं चर्चा करने के लिए एक साथ लाने प्रयास है। इस सेमिनार का उद्देश्य भारत के पश्चिमी क्षेत्रों में धरातल के नीचे छिपे और पत्थरों पर उकेरे गए चित्रों आदि अमूल्य खजानों पर प्रकाश डालना है साथ ही इतिहास लेखन में अभिलेखीय सामग्री के उपयोग के महत्व एवं अज्ञात स्रोतों की चर्चा करना है। इस संगोष्ठी के माध्यम से इस तथ्य को सम्बल प्रदान करने का प्रयास किया जायेगा कि यह क्षेत्र एक विविध और बहुआयामी इतिहास को समेटे हुए है, जो देश के इस हिस्से में पनपे विभिन्न राजवंशों, संस्कृतियों और धर्मों से गहराई से जुड़ा हुआ है। प्रख्यात पुरातत्त्वविद्, इतिहासकार और शोधार्थीगण उत्खनित स्थलों, निष्कर्षों और शिलालेखों को समझने के बारे में अपनी अंतर्दृष्टि साझा करेंगे, जिससे क्षेत्र के इतिहास और इसकी सांस्कृतिक संपदा की गहरी समझ मिलेगी।

सेमिनार हेतु उप–विषय इस प्रकार हैं–

- **पश्चिमी भारत में सिंधु घाटी सभ्यता–** हड़प्पीय सभ्यता के स्थलों का नवीनतम उत्खनन एवं व्याख्याएं।
- **रॉककट मंदिर और गुफाएँ–** पश्चिमी भारत में चट्टानों को काटकर बनाए गए मंदिरों और गुफाओं, जैसे अजंता और एलोरा की गुफाओं का व्यापक विश्लेषण, जो उनकी स्थापत्य प्रतिभा और धार्मिक महत्व को दर्शाता है।
- **ऐतिहासिक अभिलेख के रूप में शिलालेख–** अशोक के शिलालेखों से लेकर चालुक्य और राष्ट्रकूट शिलालेखों तक, पश्चिमी भारत में पाए गए विभिन्न शिलालेखों, स्तम्भ लेखों, मूर्तिलेखों, गुहालेखों, उनकी भाषाई बारीकियों और ऐतिहासिक संदर्भ से सम्बंधित।
- **पश्चिमी भारत की प्राचीन, मध्यकालीन एवं आधुनिक काल की स्थापत्य कला–** राजस्थान, गुजरात और महाराष्ट्र में हिन्दू, इस्लामिक एवं ब्रिटिश वास्तुशिल्प की शैलियाँ।

- **समुद्री व्यापार और बंदरगाह–** समुद्री व्यापार में पश्चिमी भारत की भूमिका और प्राचीन और मध्ययुगीन काल में क्रमशः द्वारका, लोथल, भरूच तथा सूरत जैसे बंदरगाहों के महत्व की एक समीक्षा।
- **पश्चिमी भारत की प्रागेतिहासिक एवं आद्य–एतिहासिक संस्कृतियाँ।**
- **पश्चिमी भारत से प्राप्त प्राचीन, मध्यकालीन एवं आधुनिक कालीन अभिलेखीय सम्पदा।**
- **पश्चिमी भारत से प्राप्त विभिन्न कालों के सिक्के एवं मुद्राशास्त्र।**
- **पश्चिमी भारत की क्षेत्रीय भाषाओं की अभिलेखीय सामग्री।**
- **पश्चिमी भारत के इतिहास के पुरातात्त्विक, पुरालेखीय, अभिलेखीय स्रोत एवं क्षेत्रीय इतिहास लेखन।**

संक्षेप में, **पश्चिमी भारत के पुरातात्त्विक और अभिलेखीय सम्पदा : युगयुगीन** विषय पर आयोजित संगोष्ठी ज्ञान और विचारों के आदान–प्रदान के लिए एक मंच के रूप में काम करेगी, जिससे पश्चिमी भारत की समृद्ध विरासत की गहनशिलता को बढ़ावा मिलेगा। यह सेमिनार इस क्षेत्र के रहस्यमय इतिहास को उजागर करने के लिए इन पुरातात्विक और अभिलेखीय स्रोतों के संरक्षण और दस्तावेजीकरण के महत्व पर जोर देगा। इस तरह के आयोजन आने वाली पीढ़ियों के लिए हमारी सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा की जिम्मेदारी हेतु सामूहिक भावना को बढ़ावा देने, शिक्षा जगत और आम जनता के बीच की खाई को पाटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहेंगे।

शोध–पत्र भेजने के हेतु निर्देश–

- ❖ शोध–पत्र उपर्युक्त दिए गए उप–विषयों एवं अन्य संबंधित विषय पर हो सकते हैं। शोध–पत्र का सारांश 200 से 250 शब्दों में दिनांक 10–09–2023 तक भेजें।
- ❖ सभी प्रतिभागी नीचे दी गई लिंक पर गुगल फोर्म भरें एवं शोधपत्र का सारांश पीडीएफ में लिंक में साथ संलग्न करें।
- ❖ शोध–पत्र गुजराती, हिंदी या अंग्रेजी में प्रस्तुत किए जा सकते है।
- ❖ अंग्रेजी के लिए फॉन्ट टाइम्स न्यू रोमन, हिंदी के लिए मंगल, युनिकोड एवं गुजराती के लिए श्रुति फॉन्ट एवं फोन्ट साइज 12 रखें।
- ❖ पूर्ण शोध पत्र 2000 से 4000 शब्दों में होना चाहिये जिसे नीचे दिए हुए इमेल पर भेजें – sourcesofwesternindia@gmail.com
- ❖ शोध पत्र दिनांक 13–09–2023 तक उपर्युक्त ईमेल पर प्राप्त हो जाने चाहिये।
- ❖ संगोष्ठी पंजीकरण शुल्क 250 रुपये है, जो दिनांक 15–09–2023 को संगोष्ठी स्थल पर लिया जाएगा।

नोटः– संगोष्ठी की रूपरेखा इमेल द्वारा तारीख 14–09–2023 तक भेजी जाएगी।

गूगल फॉर्म लिंक : *https://forms.gle/XSBdyazquaN6LrcQ6*